फोनः-4103333, 2362400 फैक्सः-0141-2373513 वर्षः 76 संख्याः 79 प्रभात जयपुर, रविवार 19 अक्टूबर, 2025 डाक पं.सं. जयपुर सिटी/001/2021-23 पृष्ठ 8 मूल्य 2.75 रु.

ARBiT

जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

Metro

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

Cheetah And Its Lair

Many volunteered to be a part of ultra-marathons and the famous Bakshi Cup to test their limits and bring laurels to NDA. 'Tough times never last, tough people do'

Abandonment, Agony And Sorrow

Lakshmana's Painful Duty: Taking Sita to Valmiki's Hermitage

'पाकिस्तान एक शांतिप्रिय देश है'

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 18 अक्टूबर। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने यह कहते हुए पाकिस्तान को चेतावनी दे डाली कि ब्रह्मोस मिसाइल की रेंज में पाकिस्तान की एक-एक इंच ज़मीन आ चुकी है। इसके जवाब में पाकिस्तान के सेना प्रमुख जनरल सैयद आसिम मुनीर ने भी किसी भी उकसावे पर "निर्णायक जवाब" देने की चेतावनी दे दी। इस

- पाकिस्तान के सेनाध्यक्ष सैयद आसिम मुनीर ने साथ में यह भी कहा कि पाकिस्तान के, विश्व की दो ताकतों, चीन व अमेरिका से मजबूत संबंध हैं।
- "अगर भारत-अफगानिस्तान को उकसाता रहा तो पाकिस्तान करारा जवाब देगा।"

ज़बानी लड़ाई में दोनों पड़ोसी देशों के बीच तनाव बढ़ गया है।

पाकिस्तान सैन्य अकादमी, काकुल (एबटाबाद) में कैडेट्स की पासिंग आउट परेड में बोलते हुए जनरल मुनीर ने कहा, "मैं भारत के सैन्य नेतृत्व को सलाह, बल्कि सख्त चेतावनी देता हूँ कि परमाणु हथियारों वाले माहौल में युद्ध के लिए कोई जगह नहीं है।"

उन्होंने कहा, "हम किसी भी

(शेष पृष्ठ 4 पर)

अंततोगत्वा "टाको" ट्रंप अपनी प्रतिष्ठा पर खरे उतरे

अंतर्राष्ट्रीय कूटनीति में ट्रंप को टाको बेवजह नहीं कहते। टाको का अर्थ है, "ट्रंप ऑलवेज़ चिकन्स आउट", क्योंकि ट्रंप अपनी धमकियों से पीछे हट जाया करते हैं

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 18 अक्टूबर। यूक्रेन युद्ध अब अपने अंत के करीब लगता है, हालांकि यह अंत शायद यूक्रेन, यूरोपीय संघ या अमेरिका की शर्तों पर नहीं, बल्कि रूस की शर्तों पर हो सकता है।

अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप ने एक बार फिर अपनी उसी छवि को साकार कर दिया है, जिसे लोग "ट्रंप ऑलवेज़ चिकन्स आउट" या "टाको" कहते हैं। यानि, ट्रंप अपनी धमकियों से हमेशा पीछे हट जाते हैं। वाइट हाउस में यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमिर ज़ेलेंस्की से मुलाकात के बाद ट्रंप ने यह साफ कर दिया कि अमेरिका यूक्रेन को अमेरिकी निर्मित "टॉमाहॉक मिसाइलें" नहीं देगा।

यूक्रेन के लिए जो ऊँची उम्मीदें बंधी थीं, वे उस समय धराशायी हो गईं जब ट्रंप और ज़ेलेंस्की की द्विपक्षीय बैठक के बाद यह स्पष्ट बयान आया कि अमेरिका द्वारा बनाई गई "टॉमाहॉक" मिसाइलें, यूक्रेन को रूस के खिलाफ उसके लंबी दूरी के हमलों के लिए नहीं दी जाएँगी।

इससे पहले डॉनल्ड ट्रंप ने बड़े-बड़े दावे किए थे कि वे यूक्रेन को अत्यंत सटीक और विनाशकारी टॉमाहॉक मिसाइलें देंगे ताकि वह रूस के साथ अपनी लंबी दूरी की लड़ाई जारी रख सके। अमेरिका के युद्ध सचिव पीट हेगसेथ ने भी सार्वजनिक रूप से कहा था कि अगर रूस ने यूक्रेन के खिलाफ युद्ध खत्म नहीं किया, तो अमेरिका समान स्तर पर युद्ध लड़ने के लिए यूक्रेन को "मारक क्षमता" उपलब्ध कराएगा।

असल में, यूक्रेन को टॉमाहॉक मिसाइलें मिलने की चर्चा ने रूस के सुरक्षा तंत्र में भय का माहौल पैदा कर दिया था। इस धमकी को गंभीरता से लेते हुए रूस के विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव ने चेतावनी दी थी कि अगर अमेरिका यूक्रेन को टॉमाहॉक मिसाइलें देता है, तो अमेरिका और रूस के रिश्ते बुरी तरह प्रभावित होंगे।

रूस ने यह भी धमकी दी थी कि वह यूक्रेन के खिलाफ अपने सैन्य अभियान और तेज़ करेगा और अन्य क्षेत्रों में भी बड़ी बाधाएं पैदा करेगा। संकेत थे कि यूरोपीय संघ को भी जवाबी कार्यवाही का सामना करना पड़ेगा। कुछ मिलाकर, इसका अर्थ यह होता कि अमेरिका को भी सीधे टकराव का सामना करना पड़ेगा।

यह सब सुनने के बाद ट्रंप डर गए और तुरंत अपना रुख बदल लिया।

- वाइट हाउस में ज़ैलेन्स्की से लंबी मुलाकात के बाद ट्रंप ने साफ कह दिया कि टॉमाहॉक मिसाइल यूक्रेन को नहीं दी जायेगी, रूस के खिलाफ इस्तेमाल करने के लिए।
- कल तक ट्रंप दंभपूर्वक कह रहे थे, वे यूक्रेन को टॉमाहॉक मिसाइल देंगे, जिससे युद्ध में यूक्रेन, रूस को पानी पिला देगा।
- अगर टॉमाहॉक यूक्रेन को दी गई तो रूस हर मुद्दे पर कमर कस के लड़ेगा।
- चेतावनी का असर हुआ और ट्रंप "चिकन आउट हुए" (पीछे हट गए)।

(शेष पृष्ठ 4 पर)

कांग्रेस 60 सीटों पर चुनाव लड़ेगी

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 18 अक्टूबर। सूत्रों के अनुसार, कांग्रेस पार्टी आगामी बिहार विधानसभा चुनावों में राजद और अन्य छोटी पार्टियों के साथ बने महागठबंधन

- तेजस्वी महागठबंधन का चेहरा घोषित।

के तहत 60 सीटों पर चुनाव लड़ेगी। शनिवार को मिली जानकारी के अनुसार, लालू प्रसाद यादव के पुत्र और राजद नेता तेजस्वी यादव गठबंधन के मुख्यमंत्री पद के उम्मीदवार होंगे।

यह स्पष्टीकरण ऐसे समय में आया है, जब शुक्रवार को महागठबंधन की

(शेष पृष्ठ 4 पर)

दिल्ली के सांसद फ्लैट्स में आग

- जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 18 अक्टूबर। राजधानी दिल्ली में सांसदों को आंवटित नए बहुमंज़िला फ्लैट्स में शुक्रवार दोपहर आग लग गई। प्रत्यक्षदर्शियों द्वारा

- हाल ही में बने इस ब्रह्मपुत्र अपार्टमैंट में कुछ सांसद रह रहे हैं।

ली गई वीडियो में सांसदों के फ्लैट्स वाले ब्रह्मपुत्र अपार्टमेंट्स से घना धुआँ उठता हुआ दिखाई दिया।

फायर विभाग के एक अधिकारी ने

(शेष पृष्ठ 4 पर)

बिहार में मुसलमानों का राजनीतिक महत्व क्यों घटता जा रहा है?

प्रदेश में 17.7 प्रतिशत जनसंख्या मुसलमानों की है, इस बार आरजेडी ने तीन मुसलमानों को, जदयू ने चार व कांग्रेस ने भी चार मुसलमानों को टिकट दिया है

-श्रीनंद झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 18 अक्टूबर। बिहार के मुसलमान मतदाताओं के सामने एक गहरी दुविधा खड़ी है - राज्य में होने वाले आगामी विधानसभा चुनावों में समुदाय राजनीतिक प्रक्रिया से लगभग अलग-थलग हो गया है।

राज्य की कुल जनसंख्या में मुसलमानों की हिस्सेदारी 17.7 प्रतिशत है और 87 विधानसभा क्षेत्रों में लगभग 20 प्रतिशत मतदाता मुस्लिम हैं। उत्तर बिहार के सीमांचल ज़िलों में इनकी हिस्सेदारी लगभग 40 प्रतिशत तक है। कुछ क्षेत्रों, जैसे किशनगंज में, मुस्लिम आबादी 67 प्रतिशत तक है। इसके बावजूद, मुसलमानों की राजनीतिक प्रासंगिकता में गिरावट जारी है और आने वाले चुनावों में यह अब तक के सबसे निचले स्तर पर पहुँच गई है।

243 सदस्यीय विधानसभा की 101 सीटों पर चुनाव लड़ रही सत्तारूढ़ जदयू ने केवल चार मुस्लिम उम्मीदवार उतारे हैं। राजद (आरजेडी) ने अब तक तीन मुस्लिम उम्मीदवारों को टिकट दिया है, जबकि पार्टी की अंतिम सूची अभी जारी नहीं हुई है। एनडीए की अन्य दो सहयोगी पार्टियाँ, जीतन राम मांझी की हम (सेक्युलर) और उपेंद्र कुशवाहा की आरएलएम छह-छह सीटों पर चुनाव लड़ रही हैं, लेकिन इनमें से किसी ने भी मुस्लिम उम्मीदवार को टिकट नहीं दिया है।

कांग्रेस, जो आनुपातिक प्रतिनिधित्व की प्रबल समर्थक रही है, ने भी केवल चार मुस्लिम उम्मीदवारों को टिकट दिया है (अंतिम सूची आने के बाद इन आँकड़ों में कुछ बदलाव संभव है)। वहीं, भाजपा ने 101 सीटों की अपनी सूची में किसी भी मुस्लिम को टिकट नहीं दिया है।

ऐतिहासिक रूप से देखा जाए तो बिहार के मुसलमान चुनावी रूप से हमेशा कम प्रतिनिधित्व वाले रहे हैं। वर्ष 1985 को छोड़कर कभी भी विधानसभा में मुस्लिम विधायकों की संख्या 10 प्रतिशत से अधिक नहीं रही। वर्ष 1952 से 2020 तक हुए 17 विधानसभा चुनावों में बिहार ने कुल

- सत्तासी सीटों पर मुसलमान मतदाता 20 प्रतिशत हैं। सीमांचल जिलों में तो जनसंख्या 40 प्रतिशत है और कहीं-कहीं तो 67 प्रतिशत है।
- राजनीतिक महत्व कम होने का मुख्य कारण वोटों का विभाजन है।
- वर्ष 2010 व 2015 के चुनावों में मुसलमानों ने वोट जदयू को दिये थे। पर, वर्ष 2020 में जदयू के सभी मुसलमान कैंडिडेट हार गए थे। असदुद्दीन ओवैसी के पाँच उम्मीदवार जीते थे, जिनमें से चार जीतने के बाद आरजेडी में शामिल हो गए।

(शेष पृष्ठ 4 पर)